रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २०: रंगीन गुलदस्ता (रंग-बिरंगे फूलों का गुच्छा)

'रंगीन गुलदस्ता', 'रंग-बिरंगे फूलों का गुच्छा' खुलेदिल वाली तहजीब जिसमें गुरु नानक की महक आती है। सरबत की सांझ के अलंबरदार गुरु नानक 'सिंधु' के किनारों पर इत्तेफ़ाक के रंग बिखेरते हैं।

चले चलणहार वाट वटाइआ ॥
धंध पिटे संसारु सच न भाइआ ॥
किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबद दिखाइआ ॥
ममता मोह विसरजिआ अपनै घर आइआ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

चलनहार एक से दूसरे रास्ते का सफ़र करते हैं।
सांसारिक उलझनों में उलझे रहते हैं और सच को नहीं पहचानते।
उसकी तलाश में क्यों भटकना है जिसे विवेक के शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है।
मैं ममता और मोह को भूल कर अपने घर आया हूं।
(राग आसा, गुरु नानक)

अपने परिवारों के साथ ननकाना साहिब और सुल्तानपुर लोधी में समय बिताने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना ने तीसरी उदासी शुरू की। अनुमानों के अनुसार इस उदासी की शुरुआत पंद्रह सौ बीस ईसवी में शुरू हुई। यह उदासी उन्हें पश्चिम की ओर ले गई जहां वे मुसलमानों के मज़हबी तीर्थ के अहम स्थान पर गये।

उन्होंने सुल्तानपुर लोधी से पाकपटन, मुल्तान, उच्च, सक्कर, शिकारपुर और मीरपुर ख़ास का सफ़र किया। इससे आगे वे दक्षिण की ओर लखपत और कोटेश्वर गये जहां से उन्होंने समुद्र के रास्ते सोमयानी का सफ़र किया और हिंगलाज के लिये निकल पड़े।

सुल्तानपुर लोधी से उन्होंने सतलुज नदी के रास्ते पाकपटन का सफ़र किया।

अब हम भारत-पाकिस्तान सीमा वाघा नाका से पार कर पाकिस्तान जा रहे हैं जहां हम पाकपटन से गुरु नानक के पदचिन्हों पर सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

लोग क़यामत के दिन से ख़ौफ़ खाते हैं।
हमारे लिये उस दिन ईद होगी।
ओह असगर देख लेना, उस हश्र मैदान के अंदर।
हर तरफ उस दिन फ़रीद ही फ़रीद होगा।

गुरु नानक दूसरी बार बाबा शेख़ फ़रीद की रूहानी गद्दी के बारहवें वारिस, शेख़ इब्राहिम फ़रीद सानी के साथ गोष्ट करने जा रहे थे। शेख़ इब्राहिम को शेख़ ब्रह्म भी कहा जाता था।

आशिक कुल ज़माना, लोकी सच्चियों दा।
जग ते जारी फ़ैज़ है पीरों उच्चियों दा।
मेरे लिए तां यारां इतना काफी है,
हां, गंज शक्कर दे कुत्तियों दा।
मेरा सब वलियों दा राजा, बाबा (फरीद) मेरा सब वलियों दा राजा।

हर युग में सच्चे लोग सम्माननीय होते हैं।
उच्चे पीरों का पहरा हज़ारों की गिनती में लगती है।
मेरे लिये तो यारा इतना ही काफ़ी है।
शकर के कुत्तों का।
राजा, मेरा सब वलियों का राजा, बाबा (फ़रीद) मेरा सब वलियों का राजा।

गुरु नानक और शेख़ ब्रह्म ने शबदों के माध्यम से रूहानी सोचों का आदान-प्रदान किया। इस दौरान एक बार शेख़ इब्राहिम ने सादी ज़िंदगी और उच्च विचार के महत्व का इज़हार करने के लिये बाबा फ़रीद के सबद का गायन किया।

फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कंबलड़ी पहिरेउ ॥
जिन्नी वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥
(श्लोक शेख फ़रीद)

फ़रीद फरमाते हैं कि मैंने अपने भेद-भाव का लिबास तार-तार कर दिया है और वहदत की कंबली पहन ली है।
मैंने वह भेष धारण कर लिया है जो मुझे मेरी चेतना से जोड़ता है।
(श्लोक शेख फ़रीद)

इसके बाद गुरु नानक ने बाबा फ़रीद के कायनाती प्रेम के फ़लसफ़े की तस्दीक करते हुये शबद का गायन किया। यह प्यार ही वह अहसास है जो अनेकता में ऐकता की पुकार करता है।

घर ही मुँध विदेस पिर नित झूरे संम्हाले ॥
मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअत रास करे ॥
(राग वडहंस, गुरु नानक)

चेतना का घर मनुष्य के अंदर है परन्तु जब ध्यान बाहर को होता है तब रूह अपने प्रिय की ग़ैर-हाज़री का मातम मनाती है।
चेतना के साथ मेल होने में देर नहीं लगती अगर नियत सही हो।
(राग वडहंस, गुरु नानक)

इससे आगे शेख़ ब्रह्म ने बात को आगे बढ़ाया कि सादगी वाली ज़िंदगी जीते हुये भी चंचल मन वहदत के रास्ते से भटक जाता है ।

इसके जवाब में गुरु नानक ने गायन किया,

सच की काती सच सभ सार ॥
घाड़त तिस की अपर अपार ॥
सबदे साण रखाई लाइ ॥
गुण की थेकै विच समाइ ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

जब सच के लोहे से सच का चाकू बना हो।
तो इसका शिल्प अपरंपार होता है।

जब यह 'शब्द' की साण पर तेज़ किया जाता है
फिर यह सदगुणी म्यान में डलता है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि जब मन सत्य को पहचान लेता है तो उसकी ताकत धातु के चाकू की धार की तरह तेज़ हो जाती है जो वासनाओं को चीर देती है।

मलंग बाबा: बाबा साहिब के एक साहिबज़ादे हैं, इब्राहिम फ़रीद सानी। उन्होंने बाबा नानक साहिब से बहुत अच्छी प्यार और इख़लाक की गुफ़्तगू की, इंसानियत की रहनुमाई के लिये। वह वक्त आज तक चल रहा है। बहुत खुशी की बात है कि बाबा साहिब और बाबा नानक साहिब ने इंसान की रहनुमाई के लिये, फलामुदी काम किया है। बाबा फ़रीद सरकार बहुत रहनुमा इंसान थे। इंसानियत के हमदर्द इंसान थे अल्लाह के बुज़ुर्ग थे और पंजाब के सारे, जितने इलाके के हज़रात हुये, बाबा साहिब से अक़ीदा रखते हैं। हम बाबा नानक साहिब के साथ बहुत ही ज़्यादा ख़ास अक़ीदा रखते हैं।

अपनी इस यात्रा के दौरान गुरु नानक ने शेख़ इब्राहिम की मदद से बाबा फ़रीद के अन्य शबद एकत्र किये। उनकी शिद्दत से की गई यह खोज ही बाद में गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हुई। यह माना जाता है कि पाकपटन में अपने क़ियाम के दौरान गुरु नानक ने 'आसा की वार' की पहली 'नौ पौड़ियों' की रचना की, जिन्हें गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया था।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने पाकपटन से मुल्तान तक पैदल सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये, अब हम पाकपटन से मुल्तान जा रहे हैं।

चिनाब नदी के किनारे पर मुल्तान पंजाब का प्राचीन शहर है। पौराणिक लिखतों में दर्ज़ है कि प्रह्लाद और हिरणाकश्यप की पौराणिक कथा इसी शहर में घटित हुई थी। जब तीन सौ चौबीस ईसा पूर्व में यूनानी राजे अलैग्ज़ैण्डर ने मुल्तान पर हमला किया तो यह माली सल्तनत के राज का हिस्सा था। सातवीं सदी के चीनी यात्री ह्यून सांग ने मुल्तान की नामवरी का ज़िक्र किया है। आठवीं सदी में मध्य एशिया के सौदागरों और हमलावरों द्वारा मुल्तान की इस्लाम से जान पहचान हुई। गुरु नानक के आने वाले दौर में मुल्तान, विभिन्न रीति-रिवाजों के मुस्लिम फ़कीरों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

अमरदीप सिंह: मुल्तान संतों का शहर है। यह उस संगम के करीब है जहां पंजाब की पांच नदियां शाहज़ोर सिंधु दरिया में मिल जाती हैं। शायद इसीलिये सूफ़ी संतों का मानना था कि मुल्तान में मनुष्य का अहंकार उसी तरह ख़त्म हो सकता है जिस तरह पंजाब की नदियों की व्यक्तिगत पहचान ख़त्म हो जाती है।

हम सूफ़ी रहस्यवादी शेख़ बहाउद्दीन ज़करीया के मज़ार पर जा रहे हैं।

शेख़ बहाउद्दीन ज़करीया बारहवीं सदी के रूहानी रहनुमा थे जिन्होंने बग़दाद वाले सुहरावर्दी सिलसिले की इस इलाके में नींव रखी थी। यह माना जाता है कि वह पैगंबर मुहम्मद के वंश से थे।

दक्षिण पंजाब के सफ़र के दौरान गुरु नानक और भाई मरदाना चार में से तीन सूफ़ी दोस्तों की दरगाहों पर गये; शेख़ बहाउद्दीन ज़करीया, शेख़ जलालुद्दीन बुख़ारी और शेख़ फ़रीद गंज-ए-शकर। ये सूफ़ी संत तेरहवीं सदी के चिश्ती और सुहरावर्दी सिलसिले के रहबरान थे। इनकी शोभा 'चार यार' के तौर पर है और इनकी दरगाहें इस्लामी मज़हबी जोड़-मेलों के लिये अहम स्थान मानी जाती हैं। शायद इसीलिये गुरु नानक इस स्थान पर आये थे।

अमरदीप सिंह:

आपे रसीआ आपि रस आपे रावणहार ॥

वह आप रसिया है, आप ही रस है और आप ही संहारक है।
(गुरु नानक)

ख़ुदा की हाज़रा-हज़ूर के बारे में इस गहरे शबद का उच्चारण गुरु नानक ने शेख़ बहा-उद-दीन ज़करीया की इस दरगाह पर किया। जब गुरु नानक मुल्तान पहुंचे तो इस दरगाह के 'मख़दूम' ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, दोनों ने कई दिन रूहानी गोष्टी करते हुये गुज़ारे।

'मख़दूम' अरबी का शब्द है जिसका अर्थ उस्ताद है। उपमहाद्वीप की सूफ़ी दरगाहों के रूहानी रहबरों को इस रुतबे का साथ नवाज़ा जाता है।

शेख बहा-उद-दीन ज़करीया की इस दरगाह के मख़दूम बहावदी ने ज़िक्र किया कि वह जानते थे कि गुरु नानक हिंदू और मुस्लिम के बीच फ़र्क नहीं करते थे। उन्होंने सवाल किया कि क्या रूहानी नूर हिंदुओं और मुसलमानों दोनों में निवास करता है। जवाब में, गुरु नानक ने गायन किया,

आपे रसीआ आपि रस आपे रावणहार ॥
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतार ॥१॥
रंग रता मेरा साहिब रव रहिआ भरपूर ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

वह आप रसिया है, आप ही रस है और आप ही रावणहार है।
वह आप विवाह के लबादे (मूर्ति) में सजी दुल्हन (चेतना) है। वह आप दूल्हा (सृजनहार) है और वह आप सेज (सृजना) है।
मेरा साहिब रंग में रंगा है और वह आप सभी में समाया है और भरपूर है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि सर्वोच्च शक्ति का सभी प्राणियों में वास है। वह सृजनहार है जो सब में समाया है और उसकी नज़र सब पर है।

दाता की महफ़िलों को सजाने वाले अच्छे हैं।
दाता की महफ़िलों को सजाने वाले अच्छे हैं।
सुंदर और हमेशा दारूद रहते हैं।
अमीन महबूब वह तो मरते नहीं मरते।
अमीन महबूब वह तो मरते नहीं मरते।
हज़ूर के साथ पक्की लगाने वाले अच्छे हैं।
आका की महफ़िल सजाने वाले अच्छे हैं।

भगत प्रह्लाद के सम्मान में बना प्रह्लादपुरी मंदिर, शेख़ बहा-उद-दीन ज़करीया की दरगाह के पास बना हुआ है। मौजूदा दौर में यह स्थान खंडहर हो गया है क्योंकि इसकी सेवा-संभाल करने वाली हिंदू बिरादरी उन्नीस सौ सैंतालीस में हुये मज़हबी बंटवारे के कारण यहां से पलायन कर गई थी।

अमरदीप सिंह: भगत प्रह्लाद का ज़िक्र गुरबाणी में गुरमुख के रूप में आता है, वह जिसका मुख नेकी की ओर है। मुल्तान का प्राचीन मंदिर भगत प्रह्लाद की पौराणिक किस्से की गवाही देता है।

व्यादि अंजिली साहित्य 'भागवत पुराण' में नैतिक कहानियों का संकलन है। इन्हीं कहानियों में भगत प्रह्लाद और उनके पिता राजा हिरणाकश्यप की कहानी है। हिरणाकश्यप पदार्थवाद का नुमाइंदा किरदार है जो अहंकार की नुमाइंदगी करता है। प्रह्लाद का अर्थ है अटल सकारात्मकता जो नकारात्मकता को नकारने की शक्ति की नुमाइंदगी करता है। राजा हिरणाकश्यप को यह वरदान हासिल था कि वह मनुष्य या पशु द्वारा नहीं मारा जा सकता था, वह दिन या रात में नहीं मर सकता था, द्वार के अंदर या बाहर नहीं मर सकता था और किसी हथियार से नहीं मर सकता था। इसी वरदान ने हिरणाकश्यप को अभिमानी बना दिया और वह लोगों से अपनी बंदगी करने को कहने लगा। भगत प्रह्लाद अपनी मां कयाधु की देखरेख में मूल्यों के साथ पले-बढ़े थे और उन्होंने अपने पिता की मांग को मानने से इनकार कर दिया था। हिरणाकश्यप बहुत क्रोधित हो गया और उसने अपनी बहन होलिका के साथ साजिश रची, जिसे आग में ना जलने का वरदान मिला था। जब होलिका प्रह्लाद को जलती हुई चिता में ले गई तो वह दहन हो गई और प्रह्लाद को आंच भी ना आई। इसके बाद नरसिंह ने वरदान की सभी शर्तों की अवहेलना करते हुये एक अर्ध-मानव, अर्ध-पशु के रूप में राजा हिरणाकश्यप को ख़त्म कर दिया। नेकी की बुराई पर जीत के जश्न के तौर पर, हिंदू रंगों का त्योहार होली मनाते हैं।

गुरु नानक और भगत प्रह्लाद के समय के बीच सदियों का अंतर है लेकिन 'जन्मसाखी' कलाकृतयों में दोनों को गोष्ट करते दिखाया गया है। मेरी विनम्र राय में यह कलाकृतयां गुरु नानक और भगत प्रह्लाद की फ़लसफ़ी सांझ की नुमाइंदगी करती हैं।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने प्रह्लाद की श्रद्धा के मूल का ज़िक्र बाणी में किया है,

दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥
प्रभु नाराइणु गरब प्रहारी ॥
प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

दुर्मती हिरणकश्यप (अहंकार) ने दुराचार किये।
रूहानी पक्ष से रोशन-ख़्याल ने अहंकार का विनाश किया।

प्रह्लाद (नेकी) ने कृपा की तो उसका उद्धार हो गया।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने मुल्तान से दक्षिण की तरफ चेनाब नदी में से उच्च जाने के लिये सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम उच्च जा रहे हैं।

युनानी राजा एलेग्जेंडर ने तीन सौ पच्चीस ईसा पूर्व में एलेग्जेंड्रिया नाम के शहर की स्थापना की थी। माना जाता है कि पहले उच्च शहर का नाम एलेग्जेंड्रिया था। सातवीं शताब्दी में मध्य एशिया के हमलावरों की इस इलाके पर जीत के बाद उच्च सूफी संतों के लिये आकर्षण का केंद्र बन गया। इसलिये यह शहर उच्च शरीफ़ के तौर पर भी जाना जाता है।

अमरदीप सिंह: उच्च शहर पंजाब के सुदूर दक्षिण में है। बारहवीं शताब्दी में इसे देवगढ़ कहा जाता था जिसका अर्थ है देवताओं का गढ़। अब यह शहर सूफ़ी संतों की ऐतिहासिक दरगाहों के लिये प्रसिद्ध है।

उच्च में हम बारहवीं सदी के सूफ़ी संत शेख़ जलालुद्दीन बुख़ारी की दरगाह पर जा रहे हैं। वह उज्बेकिस्तान मे बुख़ारा के रहने वाले थे। वह इस्लाम के प्रचारक थे और लाल रंग के कपड़े पहनने के लिये जाने जाते थे। वह सभी वर्गों, लिंग और मान्यताओं के लोगों के बीच लोकप्रिय थे। कहा जाता है कि लाल देद उनके नामवर शिष्यों में से एक थीं। कश्मीर में लाल देद को हिंदुओं और मुसलमानों का संरक्षक संत माना जाता है जिन्होंने लिंग और मज़हब के साथ जुड़े सामाजिक भेदभाव को तोड़ा। लाल देद ने सूफ़ीवाद, इस्लाम, शैवमत और बौद्ध मत के साथ सांझ बनाई।

अमरदीप सिंह: तेरहवीं शताब्दी में नामवर सूफ़ी संत सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी उच्च आ गये और यहीं ठिकाना कर लिया। वह उच्च शरीफ़ की इस दरगाह में दफ़न है। जब गुरु नानक और भाई मरदाना उच्च आये थे तो इस दरगाह के मख़दूम ने उनका स्वागत किया, जिनका नाम हाजी शेख़ अब्दुल बुख़ारी था।

इस सीलन भरे कमरे में सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी की कब्र है इसका अंदरूनी हिस्सा दिलकश है। बीमों के ऊपर समतल छत है जिस पर बारीक़ नमूनों की नक्काशी की गई है। दीवारों पर सजावटी पत्थर लगा हुआ है और छत पर हाथ से फूल पौधों की चित्रकारी की गई है, सुनहरे रंग में तरंग रेखायें बनी हुई है। यह कमरा

अन्य संतों और सूफ़ी संत जलालुद्दीन बुख़ारी के रिश्तेदारों की कब्रों से भरा है। ऐसा लगता है कि वे अभी भी मजलिस कर रहे हैं।

कई सिख लेखकों ने दर्ज़ किया है कि उच्च के 'मख़दूम' के पास गुरु नानक की निशानियां हैं।

हम सैयद ज़मरूद हुसैन अल हुसैनी के घर जा रहे हैं जो इस समय सैयद जलालुद्दीन बुख़ारी की दरगाह के 'मख़दूम' है।

सैयद ज़मरुद हुसैन अल हुसैनी: मैं सरकारे-आका सुरख़पोश बुख़ारी की खिदमत में झाड़ू-बरदार हूं, उस शहंशाह का। आका-ए-मख़दूमी-जहानी जहांगश्त के दौर में हज़रत बाबा गुरु नानक साहिब तशरीफ़ लाये थे। उन्होंने हमारे दादा मख़दूम-जहानी-जहांगश्त अल्लाह-रहमत को अपना ग्रंथ पेश किया।

सैयद ज़मरुद हसन ज़मरुद बुख़ारी: उन्होंने हमारे दादा को अपने खड़ाऊं, कंठे और यह किताब भेंट की जो नस्ल-दर-नस्ल हमारे साथ चल रही है। यह हमारे पास मौजूद है, यह वह किताब है। यह बाबा गुरु नानक के अपने हाथों से लिखा हुआ ग्रंथ है।

जिस ग्रंथ के बारे में गुरु नानक का 'मख़दूमों' को दिया तोहफ़ा होने का दावा है उस पर ध्यान से नज़र डालने से पता चलता है कि यह 'सुखमनी साहिब' का छापेखाने से छपा गुटका है जो सिखों के पांचवें गुरु, गुरु अर्जन देव की रचना है। दावा की गई अन्य निशानियां पेश नहीं की गई।

हालांकि इन निशानियों का कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं है, लेकिन ये निशानियां वह ज़रिया हैं जिनके द्वारा उच्च के मख़दूमों ने अपने-आप को गुरु नानक के साथ जोड़े रखा है।

सचह ओरै सभ को उपर सच आचार ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

सच सबसे बड़ा है, परन्तु सच्चा आचरण इससे भी ऊपर है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

मनुष्य स्वयं के प्रति सच्चा रहकर ही दूसरों के प्रति सच्चा हो सकता है। गुरु नानक ने कहा कि सत्य सर्वोच्च है लेकिन सच्चे चरित्र का जीवन जीना सर्वोत्तम है।

गुरु नानक और भाई मरदाना जब हाजी शेख़ अब्दुल बुख़ारी के मेहमान थे तो मुल्तान में शेख़ बहाउद्दीन ज़करीया की मज़ार के 'मखदूम' बहावदी भी उच्च पहुंचे। दोनों 'मख़दूमों' ने 'हज' के लिये मक्का जाने का फ़ैसला किया। गुरु नानक और भाई मरदाना भी उच्च से उनके साथ किश्ती पर सवार हुये। चिनाब और सिंधु नदियों से गुज़रते हुये वे सिंध में सक्कर पहुंचे।

गुरु नानक के पदचिन्हों अब हम उच्च से सक्कर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: सिंध समुंद्री और भूमि मार्गों के चौराहे पर पड़ता है। यह पाकिस्तान में पंजाब और बलूचिस्तान से लगता है और इंडिया में राजस्थान और गुजरात से लगता है। ऐतिहासिक तौर पर संस्कृतिओं, सभ्यताओं, मज़हबों और फ़लसफ़ों का सिंध में मेल होता है। शायद गुरु नानक के यहां आने का कारण भी यही रहा होगा कि विभिन्न संस्कृतियों और मज़हबों के साथ संवाद किया जाये।

मोहनजोदड़ो की सभ्यता के लिये प्रसिद्ध सिंध का नाम सिंधु नदी से निकटता के कारण पड़ा, जिसे इंडस भी कहते हैं।

सदियों से बौद्ध और हिंदू धर्म इस इलाके का अभिन्न अंग थे। बाद में सूफ़ीवाद भी यहां फला-फूला। ऐतिहासिक तौर पर सिंध वासियों को मिश्रित मज़हब के लिये जाना जाता है।

गुरु नानक का कायनाती बन्धुत्व और वहदत का संदेश सिंध के सामाजिक-मज़हबी ज़िंदगी में गहरा रच गया। गुरु नानक का फ़लसफ़ा इलाके के लोगों के दिलों को छू गया जिसमें बुनियादी तौर पर हिन्दू पृष्ठभूमि के थे, जो बाद में 'नानकपंथी' के तौर पर जाने गये।

हम सक्कर में सिंधु नदी में एक टापू पर बने ऐतिहासिक 'नानकपंथी' मंदिर जा रहे हैं जो साधु बेला के तौर पर जाना जाता है।

अमरदीप सिंह: सिंध ऐसी रहस्यमय धरती है जो मुझे हमेशा खींचती है। यहाँ मजहबों मिलाप होता है। कोई हिंदू हो, सूफ़ी हो या सिख, सभी एक हो जाते हैं।

साधु बेला मंदिर की दीवारों पर नक्श गुरु नानक की बाणी इस इलाके में उनके फ़लसफ़े के असर की गवाही देती है।

मंदिर के गर्भगृह में भागवत गीता और गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश है। दीवारों को सिख गुरुओं और हिंदू देवताओं के चित्रों से सजाया गया है।

मंदिर के सेवादार ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और हमारे लिये गुरु ग्रंथ साहिब के शबदों को पढ़ा।

सेवादार:

दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥

नानक, दया, दिलकशी और करुणा की आरज़ू रखते हैं। सृजनहार का जस सुनते और मानते हुये जीवन वसर करते हैं।

सतनाम श्री वाहिगुरु।
बोलो गुरु नानक साहिब की जय।

साधु बेला मंदिर सिंधी बिरादरी के अमीर मिज़ाज को दर्शाता है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के सिंध में सक्कर आने की याद में नानकपंथी उदासीन साधुओं ने सिंधु नदी के बीच में साधु बेला मंदिर बनाया था। नानकपंथी साधु गुरु नानक के फ़लसफ़े में यकीन रखते हैं।

नेपाल से एक नानकपंथी, बंनखंडी साधु अट्ठारह सौ तेईस ईस्वी में गुरु नानक के वहदत के संदेश का प्रचार करने के लिये सक्कर में बस गये। संगमरमर के स्तंभ पर गुरु ग्रंथ साहिब में से गुरु नानक की बाणी के साथ बंनखंडी साधु की याद भी उकेरी हुई है।

अमरदीप सिंह:

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
कसतूर कुँगू अगर चंदन लीप आवै चाउ ॥
मतु देख भूला वीसरै तेरा चित न आवै नाउ ॥
(गुरु नानक)

यदि मैं मोतियों का मन्दिर बनाऊं, उस पर रत्न जडाऊं।
उसमें कस्तूरी, केसर और चंदन का लेप करूं तो वह नज़ारा बन जाये।
यह नज़ारा मुझे भटका न दे ताकि मैं चेतना पर विचार करना भूल न जाऊं।
(गुरु नानक)

हमारे सामने एक दिलचस्प पक्ष आया कि ऐतिहासिक नक्काशी से छेड़छाड़ की गई थी। संगमरमर के खंभे पर नक्काशी में मूल रूप से 'गुरु नानक' लिखा हुआ था जिसके ऊपर रंग से 'गुरु श्री चंद' बना दिया गया है जो गुरु नानक के सुपुत्र थे और उदासीन संप्रदाय के साथ जुड़े हुये थे। इस तरह एक नाम मिटा कर दूसरा नाम लिखना उन सामाजिक-सियासी ताकतों की ओर इशारा करता है जो 'नानकपंथियों' को विविधता में बटवारा करना चाहती हैं। यह विविधता गुरु नानक में यकीन रखने वालों का गुलदस्ता है।

अमरदीप सिंह:

ੴ
पउड़ी ॥
नानक जाचै एक नाम मन तन भावंदा ॥

कायनाती सृजनहार एक है।
पउड़ी
नानक 'एक' पर सोच-विचार करने की तमन्ना रखते हैं जिससे तन और मन खुश होते हैं।

साधु बेला मंदिर से सिंधी बिरादरी की गुज़रे वक़्त की अमीर मिश्रित मज़हबी ज़िंदगी की झलक मिलती है। दुर्भाग्य से, उन्नीस सौ सैंतालीस में मज़हबी बुनियाद पर हुये बंटवारे के साथ सिंध की तहज़ीब में दरार पड़ गई।

असुरक्षा की भावना तर्कसंगत सोच पर भारी पड़ती है और बिरादरियों में बद-इत्तेफ़ाक़ पैदा होता है।

भउ मुच भारा वडा तोल ॥
मन मत हउली बोले बोल ॥
(राग गौड़ी गुआरेरी, गुरु नानक)

भय पीछे को खींचता है और इसका बोझ बहुत भारी है।
यह दानिशमंदी को कड़वे बोल बोलने के लिये प्रोत्साहित करता है।
(राग गौड़ी गुआरेरी, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने मुल्तान और उच्च के मख़दूमों के साथ संग बनाया और सक्कर से शिकारपुर का पैदल सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम सक्कर से शिकारपुर जा रहे हैं।

हम शिकारपुर में दादा रेवा चंद के आवास पर जा रहे हैं ताकि हम उनके गुरु नानक के प्रति प्यार का अहसास कर पायें।

दादा रेवा चंद:

डंडउत बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे कर हथ ॥
फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥

मैं सर्व कला समर्थ हाज़रा-हज़ूर को अनेकों बार नमन करता हूं।
हे सर्वव्यापी सृजन, नानक की विनती है कि आप अपना हाथ रखो और मुझे भटकाव से बचाओ।
हे प्रभु, मैं चारों ओर भटक कर तुम्हारी शरण में आया हूं।
नानक हाज़रा-हज़ूर से विनती करते हैं कि आप मुझे अपनी सेवा में लगा लें।

स्थानीय लोग, सिंधी नानकपंथी, गुरु नानक को बहुत मानते हैं। जो बलूची इधर आते हैं, उनमें से हमारी बिरादरी वाले, ख़ास तौर पर हिन्दू भी गुरु नानक को मानते हैं। हमारे यहां मंदिर किसी भी मज़हब के हों, उनमें गुरु ग्रंथ साहिब ज़रूर विराजमान हैं। गुरु नानक ने जो भी सन्देश दिया है, वह प्यार का दिया है, प्यार करो, विनम्र बनो।

मन माइआ मन धाइआ मन पंखी आकास ॥
तसकर सबद निवारिआ नगरु वुठा साबास ॥

मन माया-जाल है। मन भूम मे भटकता है। मन पंछी की तरह उड़ता रहता है।
शब्द का विवेक मन को गुमराह करने वाले चोरों (इंद्रियों) पर भारी पड़ता है।
(गुरु नानक)

(सिंधी बच्चे गुरु ग्रंथ साहिब के शबदों का उच्चारण करते हुए)

मैं गुरु हूं, नाथों का।
नानक हमारा नाम है।
(साईं एजाज़ शाह रश्दी)

हम शंकर आनंद भारती दरबार जा रहे हैं जो गुरु नानक की शिकारपुर आने की याद में बनाये गये प्राचीन स्थानों में शामिल है।

गुरु भी मैं हूं, चेला भी मैं हूं।
नानक भी मैं हूं, सचल भी मैं हूं।
नाथ भी मैं हूं, आदम भी मैं हूं।
शिव भी मैं हूं।
यीशु भी मैं हूं।
मूसा भी मैं हूं।
मेरे से कोई जुदा नहीं है।
केवल नाम ही अलग हैं।
(साईं एजाज़ शाह रश्दी)

अमरदीप सिंह: गुरु नानक और भाई मरदाना ने कुछ दिन शिकारपुर में बिताये। नदी के किनारे उनके क़ियाम को पेश करता हुआ यह चित्र शिकारपुर के शंकर आनंद भारती दरबार में लगा हुआ है। इलाके की 'नानकपंथी' बिरादरियों के लिये यह मंदिर पूजा का साझा स्थान है।

शिकारपुर से गुरु नानक और भाई मरदाना सिंधु नदी की ओर लौट आये। उन्होंने किश्ती में दक्षिण की ओर सफ़र किया। उच्च और मुल्तान के मख़दूम मक्के की ओर पैदल चल पड़े।

शिकारपुर से गुरु नानक के पदचिन्हों से कुछ दुरी बनाते हुये हम सेहवन शरीफ़ जा रहे हैं ताकि जो भगत सधना की यादों के साथ सांझ बनाई जा सके। भगत सधना का फ़लसफ़ा गुरु नानक के साथ मेल खता है।

हो लाल मोरी पत रखियो बला झूले लालन।
सिंधडी का, सेहवन का, शाहबाज कलंदर।
दमा दम मस्त कलंदर।
सखी शाहबाज कलंदर।
मेरी हर दम अंदर।

भगत सधना की पहचान सधना कसाई के तौर पर भी है। उनका जन्म पाकिस्तान के सिंध सूबे के सेहवन शरीफ़ में ग्यारह सौ अस्सी ईस्वी में मुसलमान परिवार में हुआ।

भगत सधना के समय के बहुत बाद इस शहर का लाल शाहबाज़ कलंदर की दरगाह से जुड़कर नाम हुआ।

उठो मदमस्तो।
उठो मदमस्तो, जाम-ए-कलंदर पी लो।
तलुए सहर है शाम-ए-कलंदर है (कलंदर सुबह-शाम में बसा है)।
कलंदर लाल लज पा ले झूले लाल।

अनहद हैसियत के ख़्याल से जीने वाले सूफ़ी मलंग और कलंदर इस दरगाह पर आते हैं। भगत सधना का रूहानी झुकाव भी इसी सीमा–रहित अस्तित्व की ओर था।

कहा जाता है कि भगत सधना को किसी ब्राह्मण ने 'सालिग्राम' पत्थर उपहार में दिया था। सालिग्राम हिंदू धर्म में विष्णु की नुमाइंदगी करता है। सम्मान के तौर पर भगत सधना पहले सालिगाराम की पूजा करते थे और बाद में उसी पत्थर से ग्राहकों के लिये गोश्त तोलते थे। उनके इस कर्म से एक ओर हिंदू ब्राह्मणों में नाराज़गी पैदा हुई और दूसरी तरफ वह मूर्तिपूजा के इलज़ाम के तहत मुसलमानों की बदकलामी का शिकार हुये। हुक्मरान ने इस कर्म को मज़हबों का निरादर मानकर, उनको जीवित दीवार में चिनवाने का हुक्म दिया। कहा जाता है कि दीवार गिर गई और भगत सधना बच गये।

मेरी राय में, दीवार का ढह जाना रूपक के तौर पर, भगत सधना का मज़हबी मुख़्तियारों की बनाई रूढ़ियों को दरकिनार करने की प्रतीक है।

भगत सधना ने अपनी बालिग़ ज़िंदगी का ज़्यादा हिस्सा इंडिया के पूर्वी पंजाब के सरहिंद शहर में बिताया और वहीं आख़िरी सांस ली।

भगत सधना और गुरु नानक के दौर में हालांकि सदियों का फ़ासला है, लेकिन उनके फ़लसफ़े का बुनियादी तत्व सांझा है। भगत सधना का एक शबद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में शामिल है।

तव गुन कहा जगत गुरा जउ करम न नासै ॥
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुक ग्रासै ॥
मै नाही कछु हउ नही किछ आहि न मोरा ॥
अउसर लजा राख लेहु सधना जन तोरा ॥
(राग बिलावल, भगत सधना)

ओ जगत गुरु! तेरा गुण किस काम का है? अगर आप मुझे मेरे मन के बुरे विचारों को मिटाने की तरकीब नहीं दे सकते।
अगर गीदड़ का शिकार ही बनना है तो शेर से अपनी रक्षा की मांग क्यों करनी है?
मैं कुछ नहीं, मेरे पास कुछ भी नहीं, और ना कुछ मेरा है।
मेरी लाज रखो, सधना तेरा विनम्र सेवादार है।
(राग बिलावल, भगत सधना)

शिकारपुर से गुरु नानक और भाई मरदाना ने सिंधु नदी में किश्ती के रास्ते से मीरपुर ख़ास का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम शिकारपुर से मीरपुर ख़ास जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: सिंध के सफ़र के दौरान गुरु नानक और भाई मरदाना ने मीरपुर ख़ास में क़ियाम किया। शहर के बीचों-बीच यह गुरुद्वारा उनकी याद में बनवाया गया था।

इंडियन उपमहाद्वीप के उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन के दौरान गुरु नानक की नामलेवा संगत को मीरपुर ख़ास से पलायन करना पड़ा, जिसके कारण यह गुरुद्वारा वीरान हो गया।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने मीरपुर ख़ास से सिंधु नदी में किश्ती से अपना सफ़र जारी रखा। उस समय कोरी नदी के तौर पर जानी जाने वाली यह नदी अरब सागर में जा समाती है। इसी में सफ़र करते हुये वे लखपत बंदरगाह पहुंचे।

हम मीरपुर ख़ास से इंडिया-पाकिस्तान की सरहद को पार करने के लिये पाकिस्तान के पंजाब जा रहे हैं और इंडिया के गुजरात राज्य में लखपत से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

अमरदीप सिंह: कभी कोट लखपत ख़ुशहाल शहर था। यह खेती के लिये उपजाऊ इलाका था, सौदागरी और ज़ियारत के लिये अहम था। यह शहर सभी मज़हबी परंपराओं वाले लोगों की मेहमानवाज़ी करता था।

रण कच्छ में अट्ठारह सौ उन्नीस में आये भूकंप ने लखपत के भाग्य का फ़ैसला किया था। भूमि पंद्रह फीट नीचे धंस गई, और दरारों में समुद्र का खारा पानी भर गया जिससे उपजाऊ इलाका बंजर हो गया। सिंधु और कोरी नदियों के बहाव लखपत से पीछे हट गये। कभी ख़ुशहाल माने जाने वाले लखपत का रुतबा छिन गया। इस इलाके को उन्नीस सौ सैंतालीस के बाद उच्च सुरक्षा वाले सीमावर्ती क्षेत्र में तब्दील कर दिया गया।

अमरदीप सिंह: जब गुरु नानक ने लखपत का सफ़र किया था तो इसका नाम बसता बंदर था। इस स्थान का निर्माण उदासीन संप्रदाय ने किया और अब इसका इंतज़ाम बतौर गुरुद्वारा चलता है।

इस ज़मीन की फ़र्द बताती है कि इस स्थान का निर्माण उन्नीसवीं सदी के शुरू में हुआ था। गुरु नानक और नानकपंथी संगत की अकीदत में स्थानीय हुक्मरान ने नज़दीक का गांव कोरियानी इस स्थान के नाम कर दिया था जहां से इसकी व्यवस्था के लिये राजस्व एकत्र किया जा सकता था।

हम लखपत से कुछ दूरी पर कोरियानी गांव जा रहे हैं जो यहां से करीब बीस किलोमीटर दूर है।

कोरियानी गांव के निवासियों ने हमें झील के नज़दीक एक उजाड़ इमारत दिखाई। उन्होंने ज़िक्र किया कि यह स्थान उदासियों ने बनाया था और इसका इंतज़ाम लखपत में गुरु नानक की याद में बने स्थान वाले इंतज़ामिया के पास ही था। यह इमारत अब खंडहर हो चुकी है, यह उन्नीस सौ साठ के दशक में वीरान हो गई थी।

राणा सोढा: मैं राणा जी रामोजी सोढा हूं। मैं कोरियानी में रहता हूं। हम सोढ़ा लोग राजपूत हैं। हम उन्नीस सौ इकहत्तर में पाकिस्तान से आये थे। जब हमने यहां रहना शुरू किया तो यह इमारत बनी हुई थी। इसकी छत भी कायम थी। अब भी लोग गुरु नानक को मानते हैं। हमारे यहां भक्ती वाले सभी आदमी गुरु नानक को मानते थे। रूहानियत के मार्ग पर चलने वाले गुरु नानक को अच्छी तरह जानते हैं।

इंडिया-पाकिस्तान के लखपत और कोरियानी सीमा क्षेत्र से विदा होते समय मैं सोच रहा हूं कि मनुष्य के बहुत सारे गुण दूसरी नस्लों के साथ एक समान हैं, पर उनका निरालापन उनकी दिमाग़ी समर्थता और सहयोग की लचक है। इस विशेषता के बावजूद आदमी ग़लती करता है और समाजिक विभाजन करता है। गुरु नानक ने मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं की तुलना अन्य प्राणियों के लक्षणों से की है और हमें उनके अच्छे गुणों में सामंजस्य स्थापित करने और बुरे गुणों को अस्वीकार करने के लिये प्रेरित किया है।

केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥
केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥
(राग गौड़ी चेती, गुरु नानक)

कई बार मैंने पौधों और पेड़ों की तरह व्यवहार किया है। कई बार मैंने पशुओं की तरह व्यवहार किया है।
कई बार मैंने नाग की चाल चली है और पक्षियों की तरह उड़ान भरी है।
(राग गौड़ी चेती, गुरु नानक)

लखपत से गुरु नानक और भाई मरदाना ने समुद्र किनारे पैदल ही सफ़र किया और कोटेश्वर पहुंचे।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम लखपत से कोटेश्वर जा रहे हैं।

गुजरात के कच्छ ज़िले में कोरी नदी की समुद्र में निकासी के पास कोटेश्वर है, जिसका प्राचीन कोटेश्वर मंदिर प्रसिद्ध है।

ऐतिहासिक तौर पर शैव मत के उपासक कोटेश्वर और हिंगलाज मंदिरों को अपने पूजा के स्थानों में शामिल करते थे। गुरु नानक के दौर में इस स्थान की देखभाल बुनियादी तौर पर गुरु गोरखनाथ के पैरोकार कनफटे जोगी करते थे। यह माना जाता है कि उन्होंने कोटेश्वर में गुरु नानक के साथ संवाद किया था।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कोटेश्वर से एक नाव ली और अरब सागर से होते हुये सोमियानी बंदरगाह का सफ़र किया।

हम इंडिया से पाकिस्तान जा रहे हैं जहां हम बलूचिस्तान के सोमयानी बंदरगाह से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ायेंगे।

कराची के उत्तर-पश्चिम की ओर सोमियानी एक तटीय कस्बा है। यह कभी ख़ुशहाल कुदरती बंदरगाह था और मध्य एशिया की सौदागरी का केंद्र था।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने सोमयानी से ज़मीनी सफ़र किया और चंद्रकूप से होते हुये हिंगलाज पहुंचे।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम सोमयानी से हिंगलाज जाते हुये चंद्रकूप जा रहे हैं जो कि हिंगोल मिट्टी के ज्वालामुखियों का झुंड है।

'चंद्र' का अर्थ चंद्रमा है और 'कूप' का अर्थ मिट्टी का कुंआ है। मिट्टी का एक ज्वालामुखी लगभग तीन सौ फीट ऊंचा है जो हिंगलाज मंदिर जाने वाले हिंदुओं के लिये ज़ियारत का स्थान है। मिट्टी की ये घाटियां ज्वालामुखियों की गतिविधि से बनी हैं और इन्हें भगवान शिव के गुस्से का भौतिक इज़हार माना जाता है।

हम चंद्रकूप से आगे हिंगलाज मंदिर जा रहे हैं।

हिंगलाज अघोर नदी के पश्चिमी किनारे पर बलूचिस्तान में है जो समुन्द्र किनारे पर मकरान पहाड़ी के नज़दीक है।

इक दम रसनी, करे ज्वाला ॥
नौए कोट को देवे जवानी ॥
हिंगलाज पर चम गई रानी ॥
हर जन के हृदय में मैं जानी ॥
भगत जना के खड़ी रहानी ॥
ੴ का भजन करे नी ॥

उसने हिंगलाज के रूप में अपनी ज्योत जलाई।
उन नौ रूपों में वह (हिंगलाज) जीवन दाती है।
वह हिंगलाज के पहाड़ों में विराजमान है।
उसका सभी प्राणियों में निवास है।
वह भगत जन की रक्षक है।
वह ੧ੳ का भजन गाती है।

हिंगलाज मंदिर ल्यारी तहसील में एक छोटी सी कुदरती गुफा में है। यह इक्यावन मुकद्दस 'शक्ति पीठ' में शामिल है और शिव की शरीक-ए-हयात सती से जुड़ा है। यह माना जाता है कि सती का सिर इस स्थान पर गिरा था। हिंदू परंपरा में हिंगलाज शक्ति की पूजा का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंगलाज माता के रूप में पूजे जाने वाले पत्थर की हिन्दू 'नानी का मंदिर' और मुसलमान 'नानी का हज' के रूप में अकीदत करते हैं।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना ने हिंगलाज का सफ़र किया तो इस इलाके में जोगी नाथपंथियों की बड़ी संगत थी। गुरु नानक की अनूठी पोशाक को देखकर उन्हें समझ नहीं आया कि वह हाजी हैं या 'नानी का मंदिर' में आये ज़ियारत हैं। जब गुरु नानक से उनके धर्म के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया,

सच वरत संतोख तीरथ गिआन धिआन इसनान ॥
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥
जुगत धोती सुरत चउका तिलक करणी होइ ॥
भाउ भोजन नानका विरला त कोई कोइ ॥

(राग सारंग, गुरु नानक)

जो सच का व्रत रखते है, संतोष का तीर्थ करते हैं, ज्ञान-ध्यान का स्नान करते हैं,
कृपा जिनका देवता है।
क्षमा जिनकी माला है, वे मनुष्य प्रधान हैं।
संयम की ज़िंदगी उनकी धोती है। उनकी सहज सूरत ही अन्न पकाने का पवित्र स्थान है
और अच्छे कर्म ही माथे का तिलक है।
नानक कहते हैं कि जो प्रेम का भोजन करते हैं, वे निराले लोग हैं।
(राग सारंग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने मज़हबी और कर्मकांडी नियमों को समाजिक तौर पर लागू करने की अवहेलना की। उन्होंने कहा कि जो कायनाती प्यार को तरजीह देते हैं वह सच्चे मज़हबी लोग हैं। वह तीर्थों, पहचानों, प्रथाओं और पोशाक के मापदंडों से ऊपर हैं।

अमरदीप सिंह: बलूचिस्तान के इस शुष्क और उजाड़ इलाके में, अघोर नदी के पास हिंगलाज के पहाड़ों में गुरु नानक के आगमन की याद में एक स्थान है। हम वहां जा रहे हैं ।

ये बंजर पथरीले पहाड़ डराते हैं। उनका वैभव हमारे हौसले को चुनौती दे रहा है और जला देने वाली गर्मी हमारी दृढ़ता को अज़मा रही है। अपने जिस्मों की ताकत पर यकीन ना होने के बावजूद हमने अपनी दृढ़ता के साथ चढ़ाई शुरू कर दी। शुरु की चढ़ाई बहुत कठिन थी, अगला सफ़र थका देने वाला था लेकिन मंज़िल तसल्ली देने वाली थी। मैं समझता हूं कि पहाड़ चढ़ने का यह कार्य हमारी ज़िंदगी की रोज़ाना चुनौतियों पर काबू पाने के समान है।

डूँगर देख डरावणो पेईअड़ै डरीआस ॥
ऊचउ परबत गाखड़ो ना पउड़ी तित तास ॥
गुरमुख अंतर जाणिआ गुर मेली तरीआस ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

मैं दुनिया के तौर-तरीकों के ख़तरनाक पहाड़ों को देखकर ख़ौफ़ज़दा हूं।

अगर किसी सीढ़ी का सहारा ना हो तो इन ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ना मुश्किल है।
रूहानी पक्ष से रोशन-ख़्याल, दुनियादारी की चुनौतियों का सामना करते हुये ही विवेक के तलबगार रहते हैं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

अमरदीप सिंह: बाबा जी वाहेगुरु जय माता की।

प्रेम बाल्मीकि: जय माता की।

अमरदीप सिंह: कैसे हैं आप।

प्रेम बाल्मीकि: यह हिंगलाज है। यहां बहुत बड़े-बड़े महात्मा आये हैं। गुरु नानक भी आये हैं और थोड़ा सा आगे है, गुरु गोरखनाथ के कदम भी हैं। धुना साहिब भी है।

अमरदीप सिंह: बलूचिस्तान और सिंध के नानकपंथी और हिंदू बिरादरियों ने एक पैर के निशान वाला स्थान बनाया है जो हिंगलाज इलाके में गुरु नानक के आगमन की नुमाइंदगी करता है।

इस स्थान के नज़दीक ही पैरों के निशान वाली यादगार गुरु गोरखनाथ के भक्तों ने भी बनाई है।

गुरु नानक के पदचिन्ह के रूप में बनाई गई यह यादगार स्थानीय हिंदू बिरादरी के गुरु नानक के प्रति प्यार और सम्मान को माणित करती है। मेरे लिये ये पदचिन्ह हमें याद करवाते हैं कि वहदत के राह पर चलो जिसके लिये गुरु नानक ने दूर-दूर के और मुश्किल क्षेत्रों का सफ़र किया।

ब्रिटिश लेखक ए. डब्ल्यू ह्यूस ने अट्ठारह सौ सतहत्तर ईस्वी की अपनी किताब 'द कंट्री ऑफ बलूचिस्तान' में 'गिचकी' कबीले का ज़िक्र किया है। उसने उन कबीलों को सिखों के तौर पर दर्ज़ किया है जो गुरु नानक के अनुयायी हैं और हिंगलाज, मकरान और कलात क्षेत्रों में रहते हैं। उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन के बाद इस इलाके में कोई भी 'गिचकी' सिख नहीं रहता।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक और भाई मरदाना ने हिंगलाज के रहस्यवादियों के साथ कुछ समय बिताने के बाद वापिस सोमियानी का सफ़र किया और समुन्द्र के रास्ते फ़ारस की खाड़ी की ओर सफ़र किया।

समुद्र का पानी एक लहर के रूप में ऊपर उठता है और अपनी पहचान स्थापित करता है लेकिन जल्द ही अपनी निराली पहचान को मिटा कर समुद्र में विलीन हो जाता है और फिर से समुद्र का पानी बन जाता है। यह रुझान मुझे गुरु नानक के शबद की याद दिलाता है जो निराला होने के फरेब का बयान करता है। जब आत्मा का परआत्मा से मेल होता है तो यह निरालापन गायब हो जाता है।

आतमा परातमा एको करै ॥
अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥
(राग धनसारी, गुरु नानक)

जब मानव चेतना कायनाती चेतना में विलीन हो जाती है
तब अंदर की दुविधा दूर हो जाती है।
(राग धनसारी, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २०: रंगीन गुलदस्ता (रंग-बिरंगे फूलों का गुच्छा)

यह चर्चा संकेतक इस एपिसोड में प्रस्तुत गुरु नानक की तीसरी यात्रा का विश्लेषण करता है, जिसमें उनके सूफ़ी संतों के साथ वार्तालाप, नानकपंथी परंपराएँ, और पाकिस्तान के सिन्धु क्षेत्र की उनकी स्मृतियाँ शामिल हैं। गुरु नानक की अनुष्ठानवाद की आलोचना, सत्यनिष्ठा पर उनके दृष्टिकोण, भय का प्रभाव, चेतना की प्रकृति, और एकत्व के प्रभाव यह दर्शाते हैं कि उनके अनुभवजन्य ज्ञान ने विविध संस्कृतियों के बीच स्थायी दार्शनिक संबंधों को कैसे बढ़ावा दिया। उनका विवेक धार्मिक सीमाओं से परे शाश्वत मार्गदर्शन प्रदान करता है। गुरु नानक की यात्राएँ एक भौतिक और रुहानी यात्रा दोनों के रूप में कार्य करती हैं, जो विभिन्न विश्वासों और क्षेत्रों में गूंजती हैं, भले ही १९४७ के विभाजन जैसे ऐतिहासिक घटनाक्रमों ने इन संबंधों में कुछ खंडन उत्पन्न किया हो।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की तीसरी यात्रा की समयरेखा क्या है, और उनकी यात्राओं के गहन प्रभाव को समझने के लिए इस कालक्रम को समझना क्यों आवश्यक है?

एपिसोड में बताया गया है कि ननकाना साहिब और सुल्तानपुर लोदी में अपने परिवारों के साथ कुछ पल बिताने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना ने अपनी तीसरी यात्रा आरंभ की, जिसे १५२० ईस्वी में शुरू हुआ माना जाता है। यह यात्रा उन्हें पश्चिम की ओर ऐसे स्थलों पर ले गई जो इस्लामिक आस्था के अनुयायियों के लिए धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थे। यह खोज गुरु नानक की समग्र दृष्टि और अंतरधार्मिक वार्तालाप को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धता को किस प्रकार दर्शाती है?

२. सूफ़ी संतों के साथ गुरु नानक के वार्तालाप ने किस प्रकार रुहानी अंतर्दृष्टियों का समृद्ध ताना-बाना बुना जिसने उन्हें भक्तिपूर्ण साहित्य संकलित करने के लिए प्रेरित किया?

पाकपट्टन की यात्रा के दौरान, गुरु नानक और शेख इब्राहीम ने रुहानी सबदों के माध्यम से दार्शनिक विचारों का आदान-प्रदान किया। शेख इब्राहीम की सहायता से, गुरु नानक ने बाबा फरीद के और अधिक सबदों को संकलित किया। यह गहन संकलन बाद में 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित किया गया। यह

सहयोगी प्रयास गुरु नानक के उस दृष्टिकोण को कैसे उजागर करता है जो धार्मिक सीमाओं से परे रुहानी ज्ञान के संरक्षण के लिए समर्पित था?

३. विविध क्षेत्रों में जीवंत सूफ़ी दरगाहों की स्थापना ने उन धार्मिक क्षेत्रों को कैसे रूपांतरित किया जहाँ गुरु नानक पहुँचे थे?

एपिसोड में बताया गया है कि आठवीं सदी में मध्य एशिया से आए व्यापारियों और आक्रमणकारियों के माध्यम से इस्लाम मुल्तान में पहुँचा। गुरु नानक की इस क्षेत्र में यात्रा के समय, मुल्तान का उच क्षेत्र विभिन्न परंपराओं के मुस्लिम फकीरों का एक प्रमुख केंद्र था। यह कई सूफ़ी संतों का केंद्र बन गया, जिसे 'उच शरीफ़' कहा जाता है, जिसका अर्थ है "श्रेष्ठ नगर"। इन सूफ़ी केंद्रों ने रुहानी वार्तालाप के अवसरों को कैसे सुगम बनाया?

४. जिन क्षेत्रों में गुरु नानक पहुँचे, वहाँ उनकी यात्राओं ने 'नानकपंथी' परंपरा के महत्व को किस प्रकार प्रभावित किया, और ऐतिहासिक घटनाओं ने इस परंपरा को कैसे प्रभावित किया?

एपिसोड बताता है कि गुरु नानक का सार्वभौमिक भाईचारे और अद्वैतवाद का संदेश सिंध की सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं में गहराई से समा गया। इस क्षेत्र के लोगों, विशेषकर हिंदू पृष्ठभूमि वालों, ने गुरु नानक के दर्शन को आत्मसात किया और उन्हें 'नानकपंथी' के रूप में जाना गया। १९४७ के विभाजन ने इस समन्वित परंपरा को कैसे प्रभावित किया, जैसा कि छोड़े गए स्थलों और बिखरे हुए समुदायों के संदर्भों में परिलक्षित होता है?

५. स्थानीय समुदायों ने गुरु नानक की विभिन्न क्षेत्रों में यात्राओं की स्मृति को किस प्रकार संरक्षित किया?

पूरे एपिसोड में उन स्थलों का उल्लेख है जो गुरु नानक की यात्राओं की स्मृति में स्थापित किए गए थे। एक प्रमुख उदाहरण है शंकर आनंद भारती दरबार, जो शिकरपुर में गुरु नानक की उपस्थिति और सिंध में सुक्कुर के माध्यम से उनकी यात्रा की स्मृति में समर्पित सबसे पुराने स्थलों में से एक है। इसके अतिरिक्त, 'नानकपंथी उदासीन साधुओं' ने सिंधु नदी के मध्य में साधु बेला स्थल की स्थापना की। ये स्मारक स्थल गुरु नानक की यात्राओं के स्थायी प्रभाव और क्षेत्र की रुहानी विरासत में उनके महत्व को कैसे दर्शाते हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक का सत्य जीवन का विचार धार्मिक सीमाओं से परे कैसे जाता है?**

एपिसोड में गुरु नानक कहते हैं कि सत्य सब से ऊँचा है, पर सत्य से भी ऊँचा है सत्य जीवन। सत्य को

केवल एक विचार न मानकर उसे एक क्रिया के रूप में देखने का यह दृष्टिकोण, उनकी यात्राओं के दौरान मिले विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच सेतु कैसे बनाता है?

२. गुरु नानक की अनुष्ठानवाद पर क्या आलोचना है, और वह रुहानी अभ्यास को किस प्रकार नया दृष्टिकोण देते हैं?

हिंगलाज में जब तीर्थयात्रियों ने उनसे उनके विश्वास के बारे में पूछा, तो गुरु नानक ने एक सबद द्वारा उत्तर दिया, जिसमें उन्होंने ईमानदारी को उपवास, संतोष को तीर्थ, बुद्धि और मनन को स्नान, दया को देवता, और क्षमा को जाप की माला बताया। वह धार्मिक और अनुष्ठानिक संरचनाओं को समाज द्वारा बनाए गए आचार नियम के रूप में अस्वीकार करते हैं। वह कहते हैं कि जो लोग सार्वभौमिक प्रेम को प्राथमिकता देते हैं, वे ही सच्चे धर्म के व्यक्ति हैं। यह रुहानी अभ्यास की हमारी समझ को किस प्रकार रूपांतरित करता है?

३. गुरु नानक अपने दार्शनिक विचारों के माध्यम से मन और चेतना की हमारी समझ को किस प्रकार उजागर करते हैं?

एपिसोड में ऐसे सबद शामिल हैं जिनमें गुरु नानक कहते हैं कि मन माया से भरा है और आकाश में पक्षी की तरह भटकता है। वह इंद्रियों की तुलना चोरों से करते हैं जो मन को भ्रमित करते हैं, यह सुझाव देते हुए कि इंद्रियों के भ्रम को रुहानी ज्ञान से समझा जा सकता है। एक अन्य सबद में वह कहते हैं कि जब आंतरिक चेतना परम चेतना से एक हो जाती है, तब द्वैत का अंत हो जाता है। यह उनके मानव मनोविज्ञान और रुहानी रूपांतरण की समझ के बारे में क्या दर्शाता है?

४. गुरु नानक की एकत्व की दर्शन विभिन्न धार्मिक परंपराओं के साथ उनके संबंधों में किस प्रकार परिलक्षित होती है?

जब उनसे पूछा गया कि क्या सर्वोच्च शक्ति हिंदू और मुस्लिम दोनों में विद्यमान है, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि यह शक्ति सृष्टिकर्ता है, पोषण का स्रोत है, और विनाशक भी है। सर्वोच्च सर्वव्यापी सत्ता प्रेम से परिपूर्ण है और सब में व्याप्त है। यह चेतना का रूप है, जैसे एक दुल्हन अपने वस्त्रों से सजी हो। यह दृष्टिकोण धार्मिक सीमाओं को समाप्त करने में किस प्रकार सहायक है?

५. भय मानवों के बीच विभाजन में किस प्रकार योगदान देता है, जैसा कि गुरु नानक की अंतर्दृष्टियों से स्पष्ट होता है?

एपिसोड में गुरु नानक का एक सबद शामिल है जिसमें वह कहते हैं कि भय अवनत करने वाला और बोझिल होता है। यह मन को भ्रमित करता है और निरर्थक वार्तालापों की ओर ले जाता है। यह अंतर्दृष्टि उनके और हमारे समय में सामुदायिक विभाजनों के मूल कारणों को समझने में किस प्रकार सहायता करती है?